पालि अध्ययन ग्रन्थमाला-3

# पालि भाषा और व्याकरण के विविध आयाम

# Pāli Bhāṣā aur Vyākaraṇa ke Vividha Āyāma


प्रधान सम्पादक

**प्रो. परमेश्वर नारायण शास्त्री**

कुलपति

सम्पादक

**अजय कुमार सिंह**



**राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्**

मानितविश्वविद्यालयः

( भारतशासनमानवसंसाधनविकासमन्त्रालयाधीनम् )

नवदेहली

# पुरोवाक्

भारतीय आर्य भाषा परिवार के अन्तर्गत पालि-प्राकृत भाषा प्राचीनतम भाषाओं में से एक है। इसका साहित्य भी अत्यन्त समृद्ध और बहुआयामी रहा है। पालि भाषा और साहित्य ने विश्व संस्कृति को सुदृढ़ किया है। पालि भाषा और साहित्य के अध्ययन और अनुसंधान से पालि त्रिपिटक के सभी अंगो को अन्वेषित कर आधुनिक संदर्भ में लोकोपयोगी बना सकते हैं। पालि त्रिपिटक में धर्म-दर्शन, शिक्षा, कला, समाज, प्रशासन आदि अनेक विषयों का समावेश है।

पालि नाम वस्तुतः बुद्ध वचनों की रक्षा करने के कारण पड़ा। इसकी व्युत्पत्ति-पंक्ति, पाठ, पालयति, आदि से की जाती है। पालि भाषा लौकिक संस्कृत की अपेक्षा वैदिक (छान्दस्) भाषा के अधिक निकट है, किन्तु इन दोनो से भिन्न भी है। ऐन्द्र, चान्द्र, पाणिनीय, सारस्वत आदि संस्कृत भाषा के सर्वाङ्ग व्याकरण है, उसी तरह कच्चान, मोग्गलान, सद्दनीति आदि पालि भाषा के सर्वाङ्ग व्याकरण हैं। संज्ञा, परिभाषा, विधि, नियम, अतिदेश, तथा अधिकार – इन छः प्रकार के सूत्रों से जैसे संस्कृत व्याकरण रचे गये हैं, वैसे ही पालि-व्याकरण भी। पालि के सभी व्याकरणों पर संस्कृत व्याकरण का प्रभाव सुस्पष्ट है। मोग्गलान व्याकरण में पाणिनि, कातन्त्र तथा चन्द्रगोमिन् के व्याकरणों से नियमादि सम्बंधी सामग्री का प्रयोग किया है। सद्दनीति व्याकरण में शैली, भाषा तथा विवेचन-प्रक्रिया, सभी पक्षों पर पर संस्कृत का प्रभाव दृष्टिगोचर होता है।

पालि ध्वनि-समूह में ऋ, ॠ, ऌ, ॡ, ऐ, औ और विसर्ग का प्रयोग नहीं है। श्, और ष् का भी प्रयोग नहीं किया गया है। संयुक्त

# विषय सूची


1. कच्चायन व कातन्त्र व्याकरण का तुलनात्मक अध्ययन —हरिशंकर शुक्ल 1

2. डॉ. भदन्त आनन्द कौसल्यायन रचित 'आवश्यक पालि' —विमलकीर्ति 8

3. भारतीय-अरिय-भासा-निकायेसु पाकत-संखत-संठान-वीमंसनं —संघसेन सिंह 14

4. ग्रंथ सम्पादन में सतर्कता —अंगराज चौधरी 22

5. संस्कृत तथा पालि साहित्य के काव्य-शैली की तुलना —अरुणा शुक्ल 30

6. सुत्तनिपात की भाषा एवं वैदिक संस्कृत —राका जैन 36

7. "धम्मपद" और "गीता" का तुलनात्मक विमर्श —अवधेश कुमार चौबे 46

8. मोग्गलान व्याकरण का वैशिष्ट्य —गुरुचरण सिंह नेगी 55

9. विमानवत्थु एवं पेतवथु का वैशिष्ट्य —मोहन मिश्र 61

10. पालि जातकट्ठकथा और जातकमाला का तुलनात्मक विवेचन —अजय कुमार सिंह 64

11. Influence of Pali and Sanskrit Grammar in Tibetan Language — Sherab Rhaldi 73

12. Buddhist Concept of Omniscience (Sarvajnata) : As reflected in some pali and sanskrit Buddhist texts —Testan Namgyal 76

13. Profoundness Of The Methods Of Pāli Mahavyākaraṇ —Bimalendra Kumar 83

**परिशिष्ट**

14. पालि साहित्य का स्वरूप —अंगराज चौधरी 90

और तद्धित को समझाया गया है। अट्ठारहवें दिन विशेषण प्रकरण है। इसमें चार प्रकार के विशेषण बताएँ गये हैं - गणवाचक, संख्यावाचक, कृदन्त और तद्धितान्त। उन्नीसवे दिन सर्वनाम प्रकरण है। इसमें उन्होंने संख्यावाचक सर्वनामों के विभक्ति प्रत्यय बताये हैं। बीसवे दिन क्रिया प्रकरण है। इसमें उन्होंने पालि के अनद्यतनभूत, परोक्षभूत तथा कालातिपत्ति (हेतुहेतुमद्भूत) आदि तीन काल बताये है।[11] इक्कीसवें दिन कृदन्त प्रकरण है। इसमें 'वाला' वाचक प्रत्यय स्पष्ट किये गये हैं। बाईसवे दिन वाच्य प्रकरण है; जैसे - भाववाच्य और कर्तृवाच्य। तेइसवे दिन भाव वाचक प्रत्यय स्पष्ट किये गये हैं। चौबीसवें दिन प्रेरणार्थक क्रिया है। पच्चीसवें दिन अव्यय प्रकरण है। इसमें तद्धित प्रत्यय १४ प्रकार के बताये हैं। छब्बीसवें दिन संधि प्रकरण है। सत्ताइसवें दिन क्रिया प्रकरण है। इसमें नामधातुओं को स्पष्ट किया गया है। अट्ठाइसवे दिन इत्थि-प्रत्यय स्पष्ट किये गये हैं। उनतीसवें दिन तद्धित प्रकरण है। तीसवे दिन समास प्रकरण है और इकतीसवे दिन में उद्बोधक बुद्धवचन दिये गये हैं। इस तरह आनन्दजी ने 'आवश्यक पालि' को इकत्तीस दिन में पालि पढ़ाने के पाठ्यक्रम के रूप में तैयार किया है।

उनकी यह पुस्तक पूरी तरह से पालि मोग्गल्लान व्याकरण को ही मूल आधार मानकर तैयार की गई है। उन्होंने इस पुस्तक में कुछ जगह पर संस्कृत व्याकरण की मान्यता का उल्लेख किया है। लेकिन इस किताब पर कहीं भी संस्कृत व्याकरण का प्रभाव दिखाई नहीं देता, न वे किसी भी रूप में संस्कृत व्याकरण को प्रमाण मानते हुये दिखायी देते है और यही उनके 'आवश्यक पालि' की एक बहुत बड़ी विशेषता है। उसी प्रकार उन्होंने अपनी इस किताब में केवल पाँच/छह जगह पर ही संस्कृत भाषा और संस्कृत व्याकरण के विषय में बताया। वहाँ उन्होंने बताया कि प्राचीन भारतीय भाषाओं को और आधुनिक भारतीय भाषाओं को पढ़ा-सीखा जा सकता है। इसी आधार पर आनन्दजी ने अपनी इस किताब को पालि पढ़ने वालों के लिए लिखा है। आधुनिक धम्मसेनापति डॉ. भदन्त आनन्द कोसल्यायन का यह प्रयत्न निश्चित सभी के लिए मान्य है, सम्मान्य है।

---

11. वही, पृ. 103

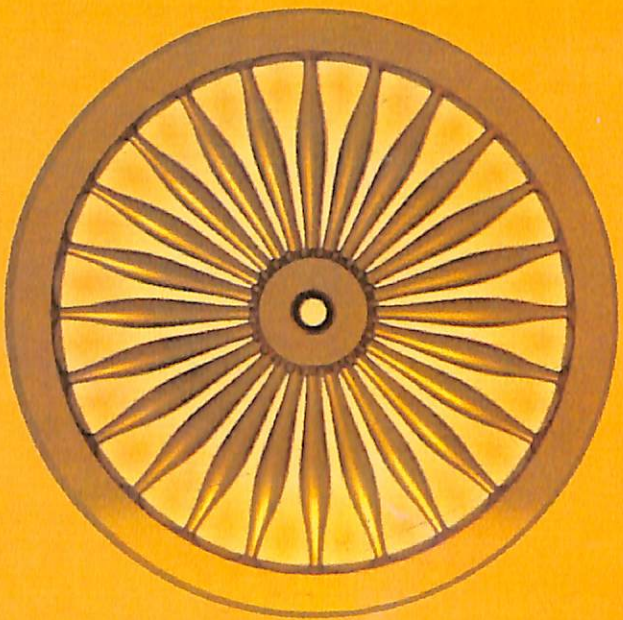

राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्

मानितविश्वविद्यालयः

( भारतशासनमानवसंसाधनविकासमन्त्रालयाधीनम् )

नवदेहली